International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

मैथिलीशरण गुप्त कृत भारत-भारती में भारत बोध

चन्दन कुमार सिंह

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय

शोध सार - भारतीय संस्कृति का केन्द्रीय भाव सर्वकल्याण है और सामासिकता भारतीय संस्कृति की अन्यतम विशेषता है। चिर पुरातन और नित्य नूतन होना ही इसकी विशेषता है। सम्पूर्ण विश्व ज्यों ज्यों अनेक संकटों और समस्याओं की जकड़न में बँधकर इससे उबरने के रास्ता खोजता है, बरबस ही उसकी आँखें भारतीय चिंतन, दर्शन तथा जीवन मूल्यों की ओर जाती हैं। यह प्रासंगिकता के संकेत हैं। भारत को केवल एक भौगोलिक सीमा के रूप में देखना सर्वथा अनुचित और अपूर्ण है क्योंकि भारत सिर्फ एक भौगोलिक रचना नहीं हैं और भारत बोध सिर्फ भारत का इतिहास नहीं है। ज्ञान के प्रकाश का प्रसार समग्र संसार में हो इस कार्य में दत्तचित्त होकर निरंतर लीन भारत को सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, कलात्मक और भाषाई आधार पर जानना, समझना और जीना ही भारतबोध है। भारतीय ज्ञान परंपरा की पूरे संसार में जिस ऊंचाई में अवस्थिति है यह निर्विवाद रूप से इसकी महत्ता और प्रासंगिकता का परिचायक है। मैथिलीशरण कृत भारत-भारती के विशेष संदर्भ में भारत के इतिहास संस्कृति आदि को प्रकाशित करना इस शोध पत्र का अभीष्ट होगा। नवजागरण के पश्चात भारत में जो नूतन परिवर्तन आए तथा भारत का जो नवोन्मेष हुआ उसे देखने का प्रयास किया जाएगा।

बीज शब्द- भारत बोध, नवजागरण, संस्कृति, नवजागरण

मूल आलेख - भारतीय साहित्य में काव्य आदि लिखते समय मंगलाचरण से इष्ट की आराधना कर आशीर्वाद लेने की परंपरा रही है और इसी परंपरा का सुंदरतम रूप में निर्वाह करते हुए मैथिलीशरण गुप्त जी भारत-भारती के मंगलाचरण में लिखते हैं –

"मानस-भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती-
भगवान! भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।
हो भद्रभावोद्भविनी वह आरती हे भगवते!
सीतापते! सीतापते!! गीतामते! गीतामते!!"[i]

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

भारतीय राष्ट्रीय चेतना रूपी भद्र भाव की जागृति का जो ध्येय लेकर मैथिलीशरण गुप्त जी भारत-भारती की रचना में प्रवृत्त हुए थे वह निश्चय ही समय की माँग थी और नवजागरण की पूरी प्रक्रिया में मातृभूमि का जिस प्रकार पुनरावलोकन कर उसे भारत की संस्कृति पर आक्रमण करने वाले गौरांगों के समक्ष इसे समादृत करने की चुनौती भारतीय चिंतकों और समाज सुधारकों के सामने खड़ी थी उस कसौटी में भी यह काव्य ग्रंथ खरा उतरता है। यह वही काल खंड है जब प्रेमचंद कृत 'सोजेवतन' और उग्र कृत 'चिंगारियाँ' की प्रतियां जब्त कर लेखकों पर राजद्रोह का अभियोग लगाया जा रहा था। नवजागरण के पूर्व भारत निश्चित तौर पर कई ऐसी रूढ़ियों से जकड़ा हुआ था जो समाज और संस्कृति की छवि को अनादर की दृष्टि से देखने के योग्य ही बनाती थी और उसमें भी जब सुनियोजित तरीके से आपको हीनता की अनुभूति कराते हुए जब आपको सभ्य कराने की बीड़ा वो उठाएँ जो दीर्घ कालावधि से आपको अपने अधीन रखकर आपका शोषण करने आए हों तब अपनी अवस्था पर चिंतन करना और अपना परिष्कार करने हुए अपनी विशिष्ट अस्मिता को विश्व के विराट फलक पर आदर की अधिकारिणी प्रमाणित करना और निरंतर अपमान की ग्लानि से मुक्त होकर स्वाभिमान और गौरव के साथ अपनी पगड़ी अपने माथे में रखकर खड़ा होना चिंतकों और विचारकों का परम कर्तव्य हो गया। ज्ञान के गवाक्षों से अतीत का गौरव और गूढ़ और गहन ज्ञान की सुदीर्घ परंपरा की ओर दृष्टिपात कर तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा तर्क को आत्मसात कर चिंतकों ने जो मार्ग उपयुक्त समझा उसी ने भारत का भविष्य तय किया। भारतवासियों की जिस दुरवस्था का चित्रण गुप्त जी ने अपने काव्य में किया है, गोपाल कृष्ण गोखले ने पंद्रह वर्ष पहले ही इसे समझ कर एक लेख में व्यक्त भी कर दिया जिसे विपिन चंद्र ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारत का इतिहास' में उद्धृत किया है- "वर्तमान व्यवस्था में भारतीय जाति का कद घटने या उसकी वृद्धि के रुकने की प्रक्रिया चल रही है। हमें अपना पूरा जीवन, उसका एक-एक दिन हीनता के वातावरण में जीना पड़ रहा है और हममें जो श्रेष्ठता थी उसे भी झुकना पड़ रहा है..... हमारी मनुष्यता जिन महानता की ऊंचाइयों को छू सकती है, वहाँ तक हम वर्तमान व्यवस्था में कभी नहीं पहुंच सकेंगे। प्रत्येक स्वशासी जनगण को जिस नैतिक ऊंचाई का अनुभव होता है, उसे हम महसूस नहीं कर सकते। हमारी प्रशासकीय और सैनिक योग्यताएँ धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगी और हम अपने ही देश में लकड़ी काटने वालों या कुएं से पानी निकालने वालों के रूप में जड़ होकर रह जाएंगे।"[ii] यह निश्चय ही सम्पूर्ण भारत की एक-एक जनता के लिए उपेक्षा और और अपमान का विषय था और दिनों दिन उनकी नीतियाँ अत्यंत ही प्रतिकूल होती जा रही थीं जिससे भारतवासियों का जीवन यापन दूभर हो गया फलस्वरूप उन्हें अपने मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ी। तब उन्होंने देखा की उनका अतीत अपने कतिपय रूढ़ियों को छोड़कर कितना स्वर्णिम था और अब उनके वर्तमान और यदि यही हाल रहा तो भविष्य में भी कैसी कालिमा छाने वाली है। भारत भारती की प्रस्तावना में मैथिलीशरण गुप्तजी लिखते हैं – "यह बात मानी हुई है कि भारत की पूर्व और वर्तमान दशा में बड़ा भारी अंतर है। अंतर ना कहकर इसे वैपरीत्य कहना चाहिए। एक वह समय था की यह देश विद्या, कला-कौशल और सभ्यता

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

में संसार का शिरोमणि था और एक यह समय है कि इन्हीं बातों का इसमें शोचनीय अभाव हो गया है। जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी वही आज पद-पद पर पराया मुंह ताक रही है! ठीक है, जिसका जैसा उत्थान, उसका वैसा पतन!"[iii] उस दौर में प्रेस और साहित्य की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही। पत्र पत्रिकाओं और साहित्य की अन्य विधाओं के माध्यम से देशभक्ति की भावना के प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य निष्पादित हुआ तथा अखिल भारतीय एकता तथा समाज सुधार के परिणामस्वरूप भारतीयों में भारतीय होने के एक गहरे बोध की व्याप्ति को बल मिला। समान परिस्थितियों में उलझे हुए देश की क्षेत्रीयता के विभिन्न लबादों के भीतर अखिल भारत की आत्मा के एक होने का भाव भारतवासियों विकसित हुआ। इसमें पश्चिम से आयातित विचारों और दर्शन का भी योग रहा। कृष्णदत्त पालीवाल के शब्दों में- "हमारे आधुनिक काल का भारतीय साहित्य सबसे पहले राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना के जागरण का साहित्य रहा है। भारतीय संस्कृति के साथ पाश्चात्य संस्कृति एवं विचारों के प्रमंथन से आधुनिक राष्ट्रवाद और और राष्ट्रीय चेतना का नए ढंग से अर्थ-विस्तार एवं विकास हुआ किन्तु यह अर्थ- चेतना राष्ट्र की पुरानी अवधारणा से भिन्न थी। पाश्चात्य विचारों से हमने सीखा कि राष्ट्रवाद 'उदार-चरित' की कल्पना नहीं है। हम यह मानने के लिए बाध्य हुए कि वह एक अर्थ में भौगोलिक सीमाओं से परिबद्ध है और इस शक्ति में जातीय अस्मिता अपना तेज देशभक्ति के रूप में प्रकट करती है। देशभक्ति, देश रक्षा, देश-संगठन, और जातीय क्रांति की सभी चेष्टाएँ, इच्छा, आकांक्षाएँ एवं विचारधाराएँ 'देशभक्ति' के अन्तर्गत ही समाहित हो जाती हैं।"[iv] तीन खंडों 'अतीत', 'वर्तमान', और 'भविष्यत' में विभक्त इस काव्य ग्रंथ में भारत का पूर्ण प्रतिबिंब परिलक्षित होता है। 'अतीत खंड' भारत समृद्ध बौद्धिक विरासत और गौरवशाली अतीत की विवरणिका है जो पाठक के निमित्त वह दर्पण है जिसमें झांक कर वह स्वयं को जान सकता है। इसमें भारतवर्ष की श्रेष्ठता, हमारा उद्भव, हमारे पूर्वज, आदर्श, स्त्रियाँ, हमारी सभ्यता, हमारी विद्या-बुद्धि, हमारा साहित्य जिसके अंतर्गत वेद-उपनिषद, सूत्र-ग्रंथ, दर्शन, गीता, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, ज्योतिष, अंकगणित, रेखागणित, सामुद्रिक और फलित ज्योतिष, भाषा और व्याकरण, वैद्यक, कवि और काव्य, इतिहास आदि , कला-कौशल जिसके अंतर्गत शिल्प, चित्रकारी, मूर्तिनिर्माण, संगीत, अभिनय आदि तथा हमारी वीरता, शक्ति का उपयोग, राजत्व और शासन और प्राचीन भारत की झलक देते हुए पराभव के आरंभ का वर्णन है। 'वर्तमान खंड' में दारिद्र्य, दुर्भिक्ष, दुर्गुण और विभिन्न क्षेत्रों में परिव्याप्त दुरवस्थाओं में प्रकाश डाला गया है। 'भविष्यत् खंड' में भारतवर्ष के पुनः श्रेष्ठ होने की आशाओं, संभावनाओं की बातें कहते हुए प्रत्येक नागरिक से सजग होकर देश की उन्नति में अपना योगदान सुनिश्चित करने का आग्रह है। मैथिलीशरण गुप्त जी की इन पंक्तियों में ही तीनों खंडों का सार निहित है-

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ, विचारें आज मिलकर यह समस्याएं सभी।"[v]

भारतीय साहित्य में जिन आदर्शों की स्थापना की गई है वह यह बताने के लिए पर्याप्त है कि हम कौन थे? बृहदारण्यक उपनिषद से गृहीत 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा फलेषु कदाचन' और गौतम बुद्ध का संदेश 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' तथा सत्यवादिता जैसे पारंपरिक मूल्यों की महत्ता की ओर इंगित करते हुए अपने मिथकीय साहित्य के तीन महत्वपूर्ण चरित्रों के माध्यम से कहते हैं-

"आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन-भक्षण के लिए,
जो बिक गए चांडाल के घर सत्य-रक्षण के लिए!
दे दीं जिन्होंने अस्थियाँ परमार्थ-हित जानी जहाँ,
शिवि, हरिश्चंद्र, दधीचि-से होते रहे दानी यहाँ।।"[vi]

पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली स्त्रियाँ भी अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करती रहीं हैं। विदुला, सुमित्रा और कुंती सरीखी स्त्रियों के विषय में वे लिखते हैं-

'हारे मनोहत पुत्र को फिर बल जिन्होंने था दिया,
रहते जिन्होंने नव-वधू के सुत-विरह स्वीकृत किया।
द्विज-पुत्र-रक्षा-हित जिन्होंने सुत-मरण सोचा नहीं,
विदुला, सुमित्रा और कुंती-तुल्य माताएँ रहीं।।"[vii]

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में भारतीय सभ्यता सबसे समुन्नत सभ्यता थी और सदा से दौर-ए-जहां के दुश्मन होने बाद भी हमारी हस्ती मिटती नहीं। जब विश्व की अन्य सभ्यताएँ आदिम बर्बरता से बाहर निकल नहीं पाई थी तब भी भारत में नूतन अनुसंधान हो रहे थे और दुनिया जिस रहस्यमय जिज्ञासा से चीजों को देखती थी, हमें उनके रहस्य ज्ञात थे और अब उन्ही पर वैज्ञानिक अनुसंधान हो रहे हैं। गुप्त जी के शब्दों में-

"हमको विदित थे तत्व सारे नाश और विकास के,
कोई रहस्य छिपे न थे पृथ्वी तथा आकाश के।
थे जो हजारों वर्ष पहले जिस तरह हमने कहे,
विज्ञानवेत्ता अब वही सिद्धांत निश्चित कर रहे।।"[viii]

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं का भारत में अध्ययन-अध्यापन होता रहा होगा। इन विविध शाखाओं की जानकारी हमें अपने मिथकीय साहित्य से भी मिलती है। मिथकों में वर्णित विषय खास दृष्टिकोण और व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं किन्तु कालांतर में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के जो अवशेष मिले हैं तथा नवीन शोधों से जो तथ्य प्राप्त हुए हैं वे यही प्रमाणित करते हैं कि पूरे विश्व से विद्यार्जन के लिए विद्यार्थी भारत आते थे और विश्व को ज्ञान से आलोकित करने के प्रमुख केंद्रों के रूप में यहाँ के विश्वविद्यालयों की ख्याति थी। महर्षि सनत्कुमार और ऋषि नारद के संवाद के आधार पर गुप्त जी लिखते हैं-

"हम वेद, वाकोवाक्य-विद्या, ब्रह्मविद्या-विज्ञ थे,

नक्षत्र-विद्या, क्षत्र-विद्या, भू-विद्याऽभिज्ञ थे।

निधि-नीति-विद्या, राशि-विद्या, पित्र्य-विद्या, में बढ़े,
सर्पादि-विद्या, देव विद्या, दैव-विद्या थे पढ़े।।"[ix]

भारत ने साहित्य और कला-कौशल आदि क्षेत्रों में जैसी उन्नति की थी कालांतर में इसकी अवनति भी वैसी ही रही। उत्थान से उत्तुंग शिखर में अवस्थित होकर यह पतन से गहरी खाई में जा गिरा जिसके कई कारण गुप्त जी ने गिनाए हैं। आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में भारत ने काफी उन्नति की थी और वे आश्चर्यजनक रूप से उस सुश्रुत और चरक के समय में व्याधियों के उपचार में समर्थ थे लेकिन कालांतर में जब हमारी अवनति का आरंभ हुआ तो स्वयं ही अपने विकास के सभी दरवाजे बंद कर लिए। रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में- "जब भारत के पतन का दिन आया, हमारा धर्म जड़ हो गया और मिथ्या पवित्रता की रक्षा के लिए जैसे लोग समुद्र यात्रा को पाप समझने लगे, वैसे ही, उन्होंने शल्य चिकित्सा को भी छोड़ दिया। आज तो आयुर्वेद में शल्य चिकित्सा की बात ही कपोल-कल्पित-सी लगती है, मगर प्राचीन भारत में इसका व्यापक प्रचार था। बौद्ध ग्रंथ में कथा आई है कि जीवक नामक वैद्य ने एक सेठ के मस्तक का ऑपरेशन किया था।"[x] संसार परिवर्तनशील है और इसका सबसे बड़ा सूचक है समय का निरंतर आगे बढ़ना और बदलते रहना। किसी भी व्यक्ति अथवा देश का समय भी सदा एक सा नहीं रहता। सुख-दुख, विकास-ह्रास, उन्नति-अवनति सबका होता ही है। भारत की भी अवनति हुई। भारत की अवनति के पीछे गुप्त जी अशिक्षा, स्वार्थ और लोलुपता को देखते हैं-

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

"इस भांति जब जग में हमारी पूर्ण उन्नति हो चुकी,
पाया जहां तक पथ वहाँ तक प्रगति कि गति हो चुकी,
तब और क्या होता? हमारे चक्र नीचे को फिरे,
जैसे उठे थे, अंत में हम ठीक वैसे ही गिरे!।।"[xi]

वर्तमान खंड में गुप्त जी दारिद्र्य, दुर्भिक्ष, दुर्गुण और विभिन्न क्षेत्रों में परिव्याप्त दुरवस्थाओं पर अपनेविचार रखते हैं। कैसे उस समय समाज की दशा निरंतर शोचनीय होती जा रही है और साहित्य का प्रयोजन भी सिर्फ मनोरंजन रह गया। कैसे हम कुप्रथाओं को स्वयं पोषित कर अपने समाज के सुख-शांति और विकास का मार्ग अवरुद्ध कर रहे हैं। हमारा व्यापार मिट गया और हम दैनिक जीवन में उपयोग की अधिकतर वस्तुओं के लिए विदेशी उत्पादों पर निर्भर होते गए। गुप्त जी के शब्दों में-

"हिन्दू समाज कुरीतियों का केंद्र जा सकता कहा,
ध्रुव धर्मपथ में कु-प्रथा का जाल-सा है बिछ रहा।
सु-विचार के साम्राज्य में कु-विचार की अब क्रांति है,
सर्वत्र पद-पद पर हमारी प्रकट होती भ्रांति है।।"[xii]

जिस दौर में गुप्त जी इस ग्रंथ की सर्जना कर रहे थे वह समय कुप्रथाओं से मुक्ति के प्रयास का समय था। पूर्ववर्ती सुधारकों द्वारा एक लंबी लड़ाई के बाद सती प्रथा से मुक्ति तो मिल गई थी लेकिन समाज में विधवाओं की दुरवस्थाओं का निदान होने में समय लगा। भिखारी ठाकुर के प्रसिद्ध गीत बेटी बेचवा, ओडिया कथाकार फकीर मोहन सेनापति का कथा संसार और हिन्दी में प्रेमचंद का साहित्य अनमेल विवाह को चित्रित करता है और अधिकांश स्त्रियों की दुरवस्थाओं का कारण वृद्ध-बाल्य-विवाह है-

"प्रतिवर्ष विधवा-वृंद की संख्या निरंतर बढ़ रही,
रोता कभी आकाश है, फटती कभी हिलकर मही।
हा! देख सकता कौन ऐसे दग्धकारी दाह को?
फिर भी नहीं हम छोड़ते हैं बाल्य-वृद्ध-विवाह को।।"[xiii]

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

इस विडंबना के बाद भी हमारा रूढ़िग्रस्त जड़ होता अज्ञ समाज कैसे अपना विवेक कुंठित और संकुचित कर लेता है और परिदृश्य बदलता भी है तो कैसे और कितना धीरे इसे हम नामवर जी के शब्दों में देख सकते है- "सुधार-युग के नेता विधवा की समस्या का सबसे बड़ा हल विवाह समझते थे; इसमें विधवा को खाना-कपड़ा का जोग जुटाने का भाव तो था लेकिन उसमें नारी की स्वतंत्रता स्वीकार करने का भाव न था। इसलिए विवाह के लिए पुरुष को तैयार करते समय प्रायः बाल-विधवा होने का तर्क दिया जाता था। उन लोगों के अनुसार पुनर्लग्न का अधिकार बाल-विधवा को विशेष रूप से था, क्योंकि पवित्रता का सेहरा उसी के सिर बंधा होता है।"[xiv] वर्तमान की स्थिति को समझने के लिए यह एक उदाहरण यथेष्ट है। अज्ञान, आडंबर और रूढ़ियों में जकड़ा समाज कैसे मुक्त हो रहा है और इसमें आधी आबादी के लिए पितृसत्तात्मक समाज कितना क्रूर है। कमोबेश यही स्थिति सभी ओर थी और ऐसी परिस्थितियों में भविष्य को मंगलमय बनाए का आह्वान किया जा रहा है-

"अब भी समय है जागने का देख आँखें खोल के,
सब जग जगाता है तुझे, जगकर स्वयं जय बोल के।
निःशक्त यद्यपि हो चुकी है किन्तु तू न मरी अभी,
अब भी पुनर्जीवन-प्रदायक साज हैं सम्मुख सभी।।"[xv]

इस आह्वान के साथ ही भविष्य का आईना दिखते हुए गुप्त जी साधु-संत, कवि, धनी-निर्धन, नवयुवक सभी से आह्वान करते हैं कि भावी भविष्य सुंदर से सुन्दरतर और सुन्दरतर से सुंदरतम हो सकता है किन्तु इसके लिए सबको अपने अपने कर्म में भारत की श्रेष्ठता का ध्येय लेकर प्रवृत्त होना होगा। पतन की गहरी खाई से उन्नति के चरम शिखर तक जानेके लिए मनोयोग पूर्वक सबको यत्न करना होगा। गुप्त जी जिस समाज से यह आह्वान कर रहे थे उस समाज का प्रथम ध्येय पराधीनता से मुक्त होकर स्वराज, स्वशासन और स्वतंत्रता थी जिसमें कालांतर में वे सफल हुए। कहा जा सकता है कि इस मुक्ति की संभावना का सबसे बड़ा मध्य साहित्य ही रहा होगा-

"सौ-सौ निराशाएँ रहें, विश्वास यह दृढ़ मूल है-
इस आत्म-लीला-भूमि को वह विधु न सकता भूल है।
अनुकूल अवसर पर दयामय फिर दया दिखलाएँगे,
वे दिन यहाँ फिर आयँगे, फिर आयँगे, फिर आयँगे।।"[xvi]

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

भारत निरंतर उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहे और चढ़कर सदा वहाँ अवस्थित रहे इसके लिए गुप्त जी शुभकामना देते हैं। एक शताब्दी पूर्व जो उन्होंने देश को शुभकामनाएँ दीं उसका प्रतिफलन आज के भारत में परिलक्षित होता है। विश्व में भारत को पुनः सामर्थ्यवान स्वीकार कर आदर की दृष्टि से देखा जा रहा है और आगे भी देखा जाएगा। अंतःकरण में भारत और भारत की उन्नति का विचार लेकर सब आगे बढ़ें, सबको समान अवसर और अधिकार मिले और भारत निरंतर आगे बढ़े-

"विद्या, कला, कौशल्य में सबका अटल अनुराग हो,
उद्योग का उन्माद हो, आलस्य-अघ का त्याग हो।
सुख और दुख में एक-सा सब भाइयों का भाग हो,
अन्तः करण में गूँजता राष्ट्रीयता का राग हो।।"[xvii]

निष्कर्ष- भारत की संस्कृति पर अगाध आस्था रखने वाले कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत की संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान की परंपरा की समृद्धि और संपन्नता के चित्र खींचकर भारत की जनता के मानस पटल में भारत के उस छवि के अंकन का प्रयास किया जिसके माध्यम से वे भारतीयता को पहचान सकें और जिसपर गर्व कर सकें और भारत को सभ्य बनाने के तथाकथित ध्वजवाहकों की मुहिम के समक्ष अपनी पहचान मुखर होकर बता सकें। विगत सम्पन्नता और विषष्टता पर गर्व करने के साथ ही अपने वर्तमान को भी दर्पण में ठीक-ठीक देख सकें जिससे उसमें वांछित सुधार कर वे भविष्य को बेहतर कर सकें। 21 वीं सदी को विश्व भारत की सदी कहता है और पिछले 2 दशकों में भारत ने जो अपनी युवा शक्ति के सहयोग से कर दिखाया है यह निश्चय ही अपनी धूमिल पहचान को विश्व में आदर के साथ स्थापित करने की ओर बढ़ते कदम हैं। भारत आत्मनिर्भर हो रहा है और सतत उन्नति कर रहा है तथा भारत सभी दिशाओं में उन्मेष के पथ पर अग्रसर है।

---

[i] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 09

[ii] चंद्र, विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या 208

[iii] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज,संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 05

[iv] नगेन्द्र, डॉ.(संपा), भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, हिं. मा. का. नि. नई दिल्ली, संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या 372

[v] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज,संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 11

[vi] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज,संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 16

[vii] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 18

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

[viii] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 22

[ix] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 29

[x] दिनकर, रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज, संस्करण 2021 पृष्ठ संख्या 203

[xi] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 60

[xii] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 121

[xiii] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 122

[xiv] सिंह, नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या 50

[xv] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 133

[xvi] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 157

[xvii] गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 158